B.A. Part II Sociology (Hons.)

25-07-2020 Paper III - Indian Society

Topic — Sanskritization, Views of M.N. Srinivas II

By - Himanshu Shekhar — J.N. College, Madhubani.

संस्कृतिकरण की प्रक्रिया —

डा० एम० एन० श्रीनिवास के अनुसार सामान्य रूप से संस्कृतिकरण एक जाति को जातीय स्तरीकरण में उच्च पद प्राप्त करने के योग्य बनाता है। इस प्रक्रिया को बहुधा निम्न जातियों अथवा जनजातियों को ऊपर की ओर गतिशीलता के रूप में देखा जाता है, जिसके फलस्वरूप जातीय या सामाजिक व्यवस्था में स्थिति संबंधी या पदमूलक परिवर्तन दृष्टिगत होते हैं।

संस्कृतिकरण की इस प्रक्रिया में एक जाति विशेष को आदर्श मान लिया जाता है तथा उसी आदर्श जाति के रीति-रिवाज, प्रथा-परंपरा, कर्मकाण्ड विचारधारा तथा जीवन शैली को अपनाने का प्रयत्न किया जाता है। बहुधा यह आदर्श जाति द्विज जातियाँ अर्थात ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य ही होते हैं जिनका कि यज्ञोपवीत संस्कार होता है। संस्कृतिकरण की प्रक्रिया में ब्राह्मण आदर्श को प्रायः सभी लोग सर्वश्रेष्ठ मानते हैं, क्योंकि इसके साथ धार्मिक तथा शुद्धतावादी आदर्श की धारणा जुड़ी है। यही कारण है कि क्षत्रिय तथा अन्य मदिरासेवी और मांसाहारी समूह भी इस आदर्श की श्रेष्ठता को स्वीकार करते हैं।

डा० श्रीनिवास ने इस सत्य को भी स्वीकार किया है कि "यह जरूरी नहीं है कि संस्कृतिकरण के माध्यम से किसी भी जाति को जातीय संस्तरण में ऊँचा स्थान मिल ही जाएगा। यह बात हरिजनों पर विशेष रूप से लागू होती है। डा० श्रीनिवास के शब्दों में " किसी अस्पृश्य जाति का संस्कृतिकरण कितना भी पूर्ण क्यों न हो वह अस्पृश्यता की बाधा को पार करने में असमर्थ है और शायद इसीलिए एक हरिजन को क्षत्रिय, वैश्य या ब्राह्मण की स्थिति को प्राप्त करते हम नहीं देखते हैं।

Scanned with CamScanner